भारत का स्वर्णिम इतिहास

डॉ. के. एस. भारद्वाज
पूर्व-प्राचार्य, परशुराम कालिज ऑफ ऐजुकेशन,
गोहाना, हरियाणा

भारतीय अपने स्वर्णिम इतिहास को भूल चुके हैं। इसके लिये वे स्वयं इतने दोषी नहीं हैं जितने स्वतंत्रता से पहले के विदेशी शासक और बाद में भारतीय शिक्षा प्रणाली जो धर्मनिर्पेक्षता की नकाब ओढ़ नई पीढ़ी को उसके स्वर्णिम इतिहास से महरूम रख रही है। जब बालक को अपने अतीत से अवगत ही नहीं कराया जायेगा तो वह अज्ञानता के अंधकार-गर्त में ही गिरेगा और वह कैसे जान सकेगा कि इसी देश में शरणागत की रक्षा की और सत्य की रक्षा की खातिर शिवि जैसे सम्राट जिन्होंने अपने अंग काट काट कर भेंट कर दिये थे और हरिश्चंद्र जैसे राजा जिन्होंने न केवल अपने आपको बल्कि पत्नि व बेटे को भी बेच डाला था, हुए हैं। इसी अज्ञानता के कारण संभवतः वह भारतीय सभ्यता और संस्कृति के बारे में अपने देसी विद्वानों पर भी विश्वास नहीं कर पाता है और इसकी तस्दीक के लिये उसे विदेशियों की ओर ताकने की आदत हो गई हैं।

सलिल ज्ञवाली का शोधग्रन्थ "भारत क्या है?" इस कमी को काफी हद तक दूर करेगा क्योंकि इस एक ही पुस्तक में उन्होंने विदेशी चिंतकों, दार्शनिकों, वैज्ञानिकों तथा अन्य गणमान्य विद्वानों के भारत की सभ्यता और संस्कृति पर विचार संकलित किये है।

भारत का आध्यात्म, दर्शनशास्त्र तथा नीतिशास्त्र तो विश्व प्रसिद्ध है ही, यह विज्ञान तथा तकनीकी ज्ञान में भी किसी सूरत में पीछे नहीं रहा है मगर भारतीयों को अपनी अज्ञानता के कारण इस पर विश्वास नहीं होता है। हर भारतीय को इस पुस्तक को अवश्य पढ़ना चाहिये जिससे अपने देश के गौरव से वे रूबरू हो सकें और गर्व कह सकें कि हम भारतीय किसी से कम नहीं हैं !

अमरीका के विद्वान राल्फ एमर्सन जहाँ वेदों में 'सुकून' पाते हैं वहीं जर्मन दार्शनिक शॉपेनआवर को उपनिषदों में 'संतुष्टि' अहसास होता है। फ्रांसीसी विद्वान वाल्टेयर वेदों के लिये 'पूर्व' के ऋणी अनुभव करते हैं और अमरीका के दार्शनिक हेनरी डेविड थॉरो भगवद्गीता के ज्ञान में रोजाना सुबह सुबह डुबकियाँ लगाने को अपना अहोभाग्य समझते हैं। डैनिश आणविक भौतिक शास्त्री श्री नीलस बोहर तो यहाँ तक कहते हैं कि जब भी मुझे किसी विषय में मार्गदर्शन की जरूरत होती है तो "मैं अपने प्रश्नों का उत्तर पाने के लिये उपनिषदों की शरण में चला जाता हूँ।" और एक हैं हम कि अपनी जिज्ञासाओं को शान्त करने के लिये पश्चिम की ओर ताकते रहते हैं। यह अपने स्वर्णिम अतीत की उपेक्षा और हमारी अज्ञानता नहीं है तो और क्या है?

भारत न केवल आध्यात्म में बल्कि विज्ञान, गणित, खगोलशास्त्र आदि के क्षेत्रों में भी अग्रणी रहा है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक अलबर्ट आइंसटाइन तो भारतीयों के गणित-ज्ञान का लोहा इन शब्दों में मानते हैं, "हम भारतीयों के ऋणी हैं जिन्होंने हमें गणना करनी सिखाई जिसके बिना कोई भी वैज्ञानिक खोज संभव नहीं थी।" इनसे पहले फ्रांस के प्रसिद्ध गणितज्ञ पियरे साइमन लैपलेस यही विचार इन शब्दों में "यह भारत ही है जिसने हमें दस संख्या चिन्ह दिये..." व्यक्त कर चुके थे। प्रसिद्ध भौतिकशास्त्री वर्नर हीजेनबर्ग का तो यहाँ तक कहना है कि क्वांटम फिजिक्स के कुछ-एक सिद्धांत तो भारतीय दर्शनशास्त्र के अध्ययन के बाद ही स्पष्ट हो पाये हैं। महान भौतिकशास्त्री जूलियस ऑपेनहीमर जिनको अणुबम का जनक माना जाता है, का कहना है कि "आधुनिक भौतिकशास्त्र में हम जो कुछ भी आज पाते हैं वह

हिन्दु-ज्ञानकोष के उदाहरणों से ही प्रोत्साहित परिष्कृत सामग्री हैं।" सलिल ज्ञवाली ने अन्य दर्जन भर विद्वानों के विशिष्ट विचार इस संकलन में प्रस्तुत किये हैं जिससे आम भारतीय को अहसास हो सके कि उनकी भारत और उसकी ज्ञान-धरोहर के बारे में क्या राय है ?

विदेशी विद्वान भारत की महान सभ्यता और संस्कृति से भी अभिभूत हैं। प्रसिद्ध अमरीकी हास्य-लेखक एवं व्यंगकार मार्क ट्वेन का यह कहना कि "भारत अनेक धर्मों का देश, मानवजाति की पोषण-स्थली, मानव-वाणी की जन्म-स्थली, कथा-साहित्य की पितामही, रीति-रिवाजों की प्रपितामही है..." एवं हमारा "सम्पूर्ण बहुमूल्य और मार्गदर्शक ज्ञान भारतीय कोष में ही है" भारतीय महानता की स्वीकारोक्ति के लिये पर्याप्त है। बर्नाड शॉ स्वीकार करते हैं कि पश्चिम कृत्रिम मुखौटा पहने रहता है और अगर उसे प्राकृतिक जीवन जीना सीखना है तो उसे भारतीय जीवन-पद्धति को अपनाना होगा। फ्रांसीसी लेखक एवं चिंतक रोमां रोलां का तो यहाँ तक कहना है कि भारतीय धर्मविज्ञान आस्थावादी और अनास्थावादी : दोनों को बराबर के अवसर प्रदान करता है और उसका विज्ञान से कोई विरोध नहीं है। जर्मनी के महाकवि, पत्रकार एवं निबंधकार हैनरिक हीन पश्चिमी देशों द्वारा भारत की लूट पर व्यंग करते हुए कहते हैं कि उन्होंने भारत की संपदा को दोनों हाथों से लूटा है। जर्मनी भी ऐसा ही करना चाहेगा मगर वह उसकी संपदा को नहीं, उसके ज्ञान को लूटना चाहेगा। अमरीकी भाषाविद् लीयोनार्ड ब्लूमफील्ड का कहना है कि यूरोप की सभी भाषाओं में क्रांतिकारी सुधार में भारतीय ज्ञान का ही अमूल्य योगदान है। रोम के चिंतक मर्सिया इलियेड का मत है कि भारतीय योग मानव को परिमितता से अपरिमितता और सीमित से असीम की ओर ले जाकर पूर्णता प्रदान करता है।

डैनिश आणविक भौतिक शास्त्री श्री नीलस बोहर जहाँ भारतीय ज्ञानकोश को हर क्षेत्र में अपना मार्गदर्शक मानते हैं वहीं जर्मनी के चिंतक फ्रेडरिक हीगल का मानना है कि विश्व-इतिहास में गति प्रदान करने के लिये भारतीय ज्ञान की विशिष्ट भुमिका है। वहीं ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के वर्षों तक भारत में कार्यरत रहे पत्रकार मार्क टुली का कहना है कि मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारत को यह कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिये कि "हाँ, हमारी सभ्यता का जीवनाधार हिन्दुत्व में है।"

भारतीय सभ्यता और संस्कृति को आधुनिक चिंतकों ने भी हृदयंगम किया है और समय समय पर इसकी तारीफ में कसीदे पढ़े हैं। मशहूर भौतिकशास्त्री फ्रिटजॉफ कापरा का कहना है कि सृष्टि के श्रीगणेश से उसके समापन तक के अकल्पनीय दीर्घकाल को भारतीय ऋषियों ने कल्प का नाम दिया है। वेल्स के भौतिकशास्त्री ब्रियान डेविड जॉजेफसन विचारप्रक्रिया का, जिसका क्वांटम क्षेत्र से गहरा नाता है, वेदों और सांख्यों में ही होना मानते हैं। रूस के विद्वान लेखक एलैक्जंडर का तो यहाँ तक कहना है कि ईश्वर ने भारत की सृष्टि सभी पूर्वानुमानों और सिद्धांतों का खंडन करने के लिये ही की है और उसने किसी भी सिद्धांत को अंतिम कभी नहीं माना है जिसका तात्पर्य यह हुआ कि भारत सदैव शोधरत रहा है। अमरीकी वैज्ञानिक चार्लस टॉनस विज्ञान और भारतीय संस्कृति के पृथकीकरण के खिलाफ हैं और वे कहते हैं कि वैज्ञानिक और आध्यात्मिक संस्कृति को अलग अलग करना अव्यवहारिक होगा।

चीन के विद्वानों ने भी भारतीय सभ्यता और संस्कृति का लोहा माना है। डॉ. यिंग यूतांग का मानना है कि चीन का धर्म और साहित्य में; और विश्व त्रिकोणमिति, चर्तुभुजीय समीकरणों, व्याकरण, ध्वनि-विज्ञान आदि में भारत मार्गदर्शक (गुरु) रहा है। एक अन्य चीनी विद्वान हू शिह का कहना है कि उदार भारतीयों से नक्ल करने से पहले चीन ने बिंबचित्रण में इतना समृद्ध, संस्कारों में इतना सुन्दर और मनमोहक और ब्रह्मांड की तत्वमीमांसा में इतना उत्साहवर्धक धर्म कभी नहीं जाना। भारत के इस उपकार को किन्हीं शब्दों में पूर्णरूपेण व्यक्त कभी नहीं किया जा सकता।

प्रसिद्ध कवि, दर्शनशास्त्री एवं समीक्षक टी.एस.इलियट दो टूक बात करते हुए कहते हैं कि भारतीय चिंतकों की सूक्ष्म-दृष्टि के सामने युरोपियन चिंतक विद्यालय-छात्र सरीखे लगते हैं और ऑस्ट्रिया के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित भौतिकशास्त्री इर्विन शरोडिंजर पश्चिमी विज्ञान को आध्यात्मिक-पीलिये से बचाने के लिये पूर्वी संस्कृतिरूपी-रक्ताधान अत्यावश्यक समझते हैं क्योंकि जर्मनी के महान कवि और चिंतक ऑगस्ट

वॉन श्लेगल युरोप के सर्वोत्तम दर्शनशास्त्र को भी वेदान्त के सम्मुख अग्निकण के मानिंद पाते हैं। संभवतः इसी कारण फ्रांस के प्रकृतिशास्त्री और लेखक पियरे सॉनर्ट के अनुसार पाइथागोरस को भी ब्राह्मणों से ज्ञान प्राप्त करने के लिये भारत जाना पड़ा था जिसका अनुमोदन जर्मनी के भारत-विद्या-विशेषज्ञ लियोपोल्ड शरोडर भी यह कहते हुए करते हैं कि पाइथागोरस ने अपने सारे दर्शनशास्त्रीय और गणित-सिद्धान्त भारत से प्राप्त किये थे। प्रसिद्ध उपन्यासकार तथा समीक्षक ऑर्थर कोस्टलर का तो यहाँ तक मानना है कि अंधकार-युग में ऑगस्टायन जो पूर्णरूप में भारतीय रहस्यवाद से प्रभावित प्लोटिनस से पुनःप्रभावित थे, का ही बोलबाला था।

भारतीय धर्म एवं दर्शनशास्त्र की उदारता के कायल अंग्रेजी लेखक एच.जी. वैल्स का कहना है कि इसमें पर्याप्त स्थान है जिससे यह संसार के सभी धर्मों को अपने आप में समाहित कर लेता है। हिन्दु धर्म विश्व का सबसे सहिष्णु धर्म है क्योंकि इसका एक अनुभवातीत ईश्वर सभी ईश्वरों को अपने ही अंदर समाविष्ट कर लेता है।

फ्रांस के मशहूर लेखक चिंतक फ्रांसिस वॉल्टेयर के मतानुसार, "मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि खगोलविद्या, ज्योतिषविद्या, आध्यात्म आदि आदि का सारा ज्ञान हमें गंगातट से ही मिला है। यह ध्यान देने योग्य है कि 2500 वर्षपूर्व पाइथागोरस सामोस से गंगातट पर रेखागणित सीखने गया था। वह ऐसी अद्‌भुत यात्रा कतई नहीं करता अगर ब्राह्मण-विज्ञान ने युरोप में पहले ही अपना झंडा न गाड़ दिया होता।" इनके विचारों से सहमत अमरीकी कवियित्री इला विलकॉक्स कहती हैं कि वेदों में सिर्फ सम्पूर्ण जीवन के लिये धार्मिक विचार ही नहीं बल्कि "वे सिद्धान्त भी हैं जिन्हें विज्ञान ने सत्य प्रमाणित कर दिया है - विद्युत, रेडियम, इलैक्ट्रानिक, वायुयान : ये सभी उन भारतीय ऋषियों की जानकारी में थे जिन्होंने वेदों को स्थापित किया।" हम अपनी यह समीक्षा ग्रीस की महारानी फ्रेडरिका के शब्दों से करना चाहेंगे, "मुझे भारतीयों से रश्क है। ग्रीस मेरी जन्मभूमि है मगर भारत मेरी आत्मा का निवास स्थल है।"

पुस्तक में कुछ सारगर्भित लेख भी हैं। हर भारतीय को अपने देश और इसकी संस्कृति को समझने के लिये सलिल ज़वाली के इस अथक प्रयास से लाभान्वित अवश्य ही होना चाहिये।